मानसरोदक-खंड / पद्य सं. 5

धरी तीर सब कंचुकि सारी । सरवर महँ पैठीं सब बारी ॥
पाइ नीर जानौं सब बेली । हुलसहिं करहिं काम कै केली ॥
करिल केस बिसहर बिस-हरे । लहरैं लेहिं कवँल मुख धरे ॥
नवल बसंत सँवारी करी । होइ प्रगट जानहु रस-भरी ॥
उठी कोंप जस दारिवँ दाखा । भई उनंत पेम कै साखा ॥
सरवर नहिं समाइ संसारा । चाँद नहाइ पैठ लेइ तारा ॥
धनि सो नीर ससि तरई ऊईं । अब कित दीठ कमल औ कूईं ॥

चकई बिछुरि पुकारै, कहाँ मिलौं, हो नाहँ ।
एक चाँद निसि सरग महँ, दिन दूसर जल माँह ॥5॥

अर्थ :

सभी सखियों ने अपने वस्त्रों को किनारे पर रख दिया और सरोवर में स्नान करने के लिए उतर गयीं. पानी में सामूहिक रूप से स्नान करती हुई सब सखियाँ कामदेव की प्रतिनिधियों की तरह क्रीड़ा करती हुई नजर आने लगीं. वे उन नई नई कलियों की भांति हो गयीं जिनमें वसंत ने रस भरकर उन्हें सँवार दिया हो. उनके काले काले केश काले विषभरे साँपों की तरह लग रहे थे जो लहराते हुए कमल का मुख चूमने को आतुर हैं. वे प्रेम में इस प्रकार झूम रही हैं जैसे दाड़िम और दाख में कोंपलें उग रही हों और वे प्रेम की शाखा पर झुकी हुई हों. उनके सौन्दर्य का संसार ऐसा विशाल है कि सरोवर में नहीं समाएगा. इस सरोवर में चाँद अपने कई सितारों के साथ बैठा है यानि रानी पद्मावती अपनी सखियों के साथ नहाने के लिए सरोवर में बैठी हुई है. जायसी कहते हैं कि धन्य है यह सरोवर का जल जहाँ इस

तरह दिन में ही चाँद तारे उदित हो गये हों. अब यहाँ कमल और कुमुदिनी कैसे दिखाई दे सकती है भला?

सरोवर में रानी और उसकी सखियों की आभा देखकर चकई को वियोग का अनुभव हुआ और वह चकवे को पुकारती हुई कहने लगी कि प्रिये, अब हमारा मिलन कैसे होगा? एक चाँद तो रात को आसमान पर निकलता है और दूसरा अब दिन में ही जल पर उदित होने लगा है (भ्रांतिमान अलंकार: चूंकि यहाँ चकवा पक्षी को भ्रान्ति हो रही है)

शब्दार्थ : तीर = किनारा, कंचुकि = वस्त्र, मंह = में, बेली = बेल, हुलसहिं = हुलसते हुए, आवेगपूर्ण तरीके से, करिल = काले, बिसहर = विषैले, जानहु = जैसे, कोंप = कोंपल. उनंत = झुककर, धनि = धन्य है / सौभाग्यशाली, तरई = तारिकाएँ / तारे, कुईं = कुमुदिनी, नहाँ = प्रिय (चकोर के लिए)